इकाई 13 नियन्त्रण के लिए संघर्ष : कम्युनिस्ट पार्टी और गुओमिनदांग

इकाई की रूपरेखा

13.0 उद्देश्य

13.1 प्रस्तावना

13.2 कम्युनिस्ट इंटरनेशनल और चीन

13.3 सयुंक्त मोर्चे का गठन

13.4 चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (CPC)

13.5 उपलब्धियाँ और सफलताएँ

13.6 जन आंदोलन और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (CPC)

13.7 विघटन और दमन

13.8 विघटन के कारण

13.9 चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (CPC) द्वारा नई रणनीति का विकास

13.10 जियांगक्सी सोवियत

13.11 जियागंक्सी में नई राजनीति

13.12 सारांश

13.13 बोध प्रश्नों के उत्तर

13.0 उद्देश्य

यह इकाई निम्नलिखित का विश्लेषण करेगीः

- गुओमिनदांग (GMD) और चीन की कम्युनिस्ट पार्टी (CPC) के मध्य प्रतिद्वन्द्विता और किस कारण से एक संयुक्त मोर्चा का गठन हुआ;
- किस प्रकार चीनी राष्ट्रीय आन्दोलन में गुओमिनदांग (GMD) एक मजबूत सामाजिक शक्ति उभरती है;
- दोनों दलों के बीच टकराव और सयुंक्त मोर्चे की विफलता के कारण; और
- दूर-दराज के क्षेत्रों में कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा आधार निर्मित करने की रणनीति।

13.1 प्रस्तावना

चार मई 1919 की घटना के बाद का समय महत्वपूर्ण परिवर्तनों का समय था। सन यात्सेन की पार्टी कई नाम बदलकर गुओमिनदांग (GMD) बनी और 1924 में इसका पहला सम्मेलन हुआ। कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना 1921 में हुई। दोनों दल रूस में हुई क्रांति के प्रभाव में आए और कोमिनटर्न ने चीन में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी शुरू की और दोनों

दलों को नजदीक लाने की कोशिश की लेकिन यह ज्यादा दिन नहीं चला। 1925 में सन यात्सेन की मृत्यु हो गई और जियांग जिशी दल के नेता बन गये। जियांग जिशी ने 1926 में युद्ध सामंतों को हराने के लिए, उत्तरी अभियान चलाया परन्तु उन्होंने पार्टी के शुद्धिकरण का अभियान भी चलाया जिसमें सीपीसी (CPC) के सदस्यों को जीएमडी (GMD) से निष्कासित किया गया। दोनों दलों के बीच निष्ठुर टकराव उनके बीच इस विषय पर मतभेद को प्रतिबिंबित करते थे कि चीन का रूपान्तरण कैसे किया जाए। सीपीसी ने माओ के नेतृत्व में दूरस्थ क्षेत्रों में आधार क्षेत्र स्थापित करके और साथ-साथ किसान वर्ग के बीच समर्थन प्राप्त करके अपनी शक्ति को पोषित और सुरक्षित किया।

1911 की क्रान्ति के बाद के दशक में गणतन्त्रवाद का प्रयोग चीन में आर्थिक और राजनैतिक स्थायित्व कायम नहीं कर सका। गणतन्त्रीय सरकार की प्रभावशून्यता से सन यात्सेन को साम्राज्यवादियों और युद्ध सामंतों से लड़ने के नये तरीके विकासित करने पर विवश होना पड़ा और यह एक आधुनिक सेना के महत्व को रेखांकित करता है। वामपंथी और श्रमिक आन्दोलन के उभार ने राष्ट्रीय मुक्ति के संघर्ष में एक नया परिवर्तन पेश किया। इसका अर्थ यह था कि चीन के मजदूर और किसानों को सम्मिलित करके राष्ट्रवादी शक्तियों का सामाजिक आधार विस्तृत किया जा सकता था।

रूस में अक्टूबर क्रान्ति के बाद हो रहे रूपान्तरण पर भी सन यात्सेन की नजर गई और उन्होंने यह समझने की कोशिश की कि कैसे बोल्शेविकों ने अपनी सत्ता स्थापित की थी। गुओमिनदांग (GMD) के पुनर्गठन और इसके लिए व्यापक सामाजिक आधार प्राप्त करने के लिए उनका अनुभव शिक्षाप्रद हो सकता था। एक पुनर्गठित गुओमिनदांग (GMD) उन्होंने महसूस किया कि चीनी जनता के सभी भागों से समर्थन जुटा पायेगी। इसका अर्थ कम्युनिस्टों के साथ संयुक्त मोर्चे का गठन था और सोवियत-रूस से मित्रतापूर्ण मदद या समर्थन।

13.2 कम्युनिस्ट इंटरनेशनल और चीन

पश्चिमी ताकतों से पूर्ण मोह भंग की स्थिति थी। सोवियत संघ के कम्युनिस्टों ने तमाम विशेषाधिकारों और प्रादेशिक क्षेत्रों पर दावों को छोड़ने में पहल की थी। इनमें चीन में पूर्ववर्ती जार शासन के नियंत्रण वाला मंचूरियाई रेलमार्ग भी था। इसलिए, यह स्वाभाविक था कि चीन के प्रमुख राजनीतिक गुट सोवियत सरकार और वहां की कम्युनिस्ट पार्टी के साथ मैत्री संबंध स्थापित करते।

दूसरी और सोवियत सरकार, सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी और कम्युनिस्ट इंटरनेशनल का दृढ़ मत था कि सिर्फ चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (CPC) ही नहीं, बल्कि गुओमिनदांग (GMD) भी एक प्रगतिशील और क्रांतिकारी राजनीतिक गठन था। यह इस समझ पर आधारित था कि राष्ट्रीय मुक्ति के लिए संघर्ष कर रही उपनिवेशी और अर्ध-उपनिवेशी देशों की तमाम राजनीतिक और सामाजिक शक्तियों को विश्व की राजनीति में एक सकारात्मक भूमिका निभानी थी। वे यह मानते थे कि साम्राज्यवाद के विरोध में खड़े होने वाले तमाम राजनीतिक गुट नवोदित समाजवादी देश रूस के समान शत्रु के विरुद्ध विश्वव्यापी संघर्ष में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे थे। इन गुटों में शेष यूरोप के मजदूर और कम्युनिस्ट आंदोलन, और भारत और चीन जैसे उपनिवेशी और अर्ध-उपनिवेशी देशों के मजदूर और कम्युनिस्ट आंदोलन शामिल थे। इसलिए, सोवियतों और कम्युनिस्ट इंटरनेशनल के मत में यह एक मजबूत जरूरत थी कि उन्हें अवसर मिलते ही समान शत्रु के विरुद्ध आपस में सहयोग करना चाहिए।

मार्क्सवाद के विचारों पर आधारित कम्युनिस्ट इंटरनेशनल का भी दूसरे देशों में क्रांतियों को बढ़ावा देने में लाभ था, क्योंकि ये क्रांतियाँ आवश्यक रूप से चीन अथवा भारत की जनता के एक बड़े वर्ग के हितों का वहाँ के निहित स्वार्थों के हितों के विरुद्ध प्रतिनिधित्व करती। चीन में उन्होंने देखा कि केवल मजदूर और किसान ही नहीं बल्कि बूर्जुआ और मध्यम वर्ग भी युद्ध सामंतवाद के विरुद्ध थे। वहाँ युद्ध सामंतवाद का यह विरोध इसलिए था क्योंकि युद्ध सामंत चीन में सामंतवाद का मुख्य आधार थे। उनका सामाजिक और राजनीतिक प्रभाव न केवल किसानों के हितों के विरुद्ध जमींदारों के हितों का प्रतिनिधित्व करता था, बल्यि यह चीन में आधुनिकीकरण और पूंजीवाद के विकास में भी बाधक था। बूर्जुआ वर्ग के हित आधुनिक चीन के विकास में निहित थे, इसलिए ये युद्ध सामंतों के विरुद्ध थे। उनके हितों का प्रतिनिधि युद्ध सांमतवाद के विरुद्ध संघर्ष करने वाला गुओमिनदांग (GMD) था। चीनी बूर्जुआ वर्ग के स्वार्थ साम्राज्यवाद का विरोध करने में भी निहित थे क्योंकि साम्राज्यवाद भी चीन में उन्नत पूंजीवाद के विकास में बाधक था। पश्चिमी ताकतें सारे लाभ को खींच ले जाती थी और चीनी बूर्जुआ उनसे होड़ करने की स्थिति में नहीं थे। इसलिए गुओमिनदांग (GMD) ने पश्चिमी ताकतों का विरोध किया (देखिए इकाई 11)।

कम्युनिस्ट इंटरनेशनल ने भी इस स्थिति को महसूस किया, और उसने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (CPC) के अतिरिक्त गुओमिनदांग (GMD) के साथ मैत्री संबंध स्थापित किये। गुओमिनदांग (GMD) और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (CPC) दोनों के साथ इस मैत्रीपूर्ण सहयोग के बूते पर सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (CPC) और गुओमिनदांग (GMD) के संयुक्त मोर्चे के गठन की पहल में मध्यस्थ का काम कर सकी।

13.3 संयुक्त मोर्चे का गठन

सन् 1921 के बसंत में डच अभिकर्त्ता एच. मैरिंग, ने कम्युनिस्ट इंटरनेशनल के प्रतिनिधि के रूप में सन यात्सेन से मुलाकात की। सन यात्सेन सोवियत संगठनात्मक व्यवस्था और उसकी शिक्षा व्यवस्था को जानने के बारे में उत्सुक थे।

यह संयुक्त मोर्चे के लिए होने वाली वार्ताओं की शुरुआत साबित हुई। उसके बाद, इस मसले पर जनवरी 1922 में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (CPC) की केन्द्रीय समिति में विचार किया गया। उसी महीने में कम्युनिस्ट इंटरनेशनल का एक और प्रतिनिधि, एडोल्फ जौफ, सोवियत-गुओमिनदांग-चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के सहयोग का आधार तैयार करने के लिए चीन आया। लंबी बातचीत के बाद, एड़ोल्फ जौफ, ने सन यात्सेन को इस बात के लिए तैयार कर लिया कि वह सोवियत-रूस के साथ गठबंधन और गुओमिनदांग (GMD) में साम्यवादियों के प्रवेश की नीति को अपनाए। इस नीति का अनुमोदन 53 राष्ट्रवादी नेताओं ने 4 सितम्बर, 1922 को शंघाई में हुए एक सम्मेलन में किया। यह नीति संयुक्त मोर्चे की नीति के लिए और गुओमिनदांग (GMD) के पुनर्गठन के लिए भी आदर्श बन गई।

दूसरी और जून 1923 में कैंटन में आयोजित चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (CPC) के तीसरे राष्ट्रीय सम्मेलन में गुओमिनदांग (GMD) के साथ एक सयुंक्त मोर्चा बनाने के बारे में औपचारिक निर्णय ले लिया गया। सन यात्सेन ने जियांग जिशी को यह सीखने के लिए मास्को भेजा कि सोवियत व्यवस्था कैसे काम करती थी। उन्होंने उनको लेनिन और ट्राटस्की के लिए परिचय पत्र भी लिखे। जियांग जिशी के रूस में अनुभव ने उन्हें कट्टर कम्युनिस्ट विरोधी बना दिया।

जून 1924 में, गुओमिंदांग ने कैंटन में अपना पहला राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया। ली दाझाओ (Li Dazhao), माओ जेडोंग (Mao Zeodong) और अन्य साम्यवादी नेताओं ने भी

इस बैठक में भाग लिया। इस सम्मेलन में एक प्रस्ताव पारित किया गया कि कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्यों को उनकी व्यक्तिगत हैसियत में गुओमिनदांग (GMD) में प्रवेश दिया जाए। इसमें एक नये पार्टी कार्यक्रम और संविधान को अपनाया गया। इसमें गुओमिनदांग (GMD) के पुनर्गठन से संबंधित कुछ ठोस उपायों पर भी निर्णय लिया गया। गुओमिनदांग (GMD) के पहले राष्ट्रीय सम्मेलन के घोषणापत्र को भी नहीं अपनाया गया। सन यात्सेन ने घोषणापत्र में अपने तीन सिद्धांतों की एक नयी व्याख्या प्रस्तुत की। सम्मेलन ने अपने तीन सिद्धांत इस प्रकार रखे :

- सोवियत संघ के साथ मित्रतापूर्ण सम्बंध,
- चीन में मजदूर और किसान आंदोलनों का विकास, और
- चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (CPC) के साथ सहयोग।

गुओमिनदांग (GMD) एक ऐसा क्रान्तिकारी संगठन था जो चीन में राष्ट्रीय मुक्ति के पक्ष में और युद्ध सामंतवाद के विरुद्ध संघर्ष का नेतृत्व करने में सक्षम था। गुओमिनदांग (GMD) में मार्क्सवादियों के प्रवेश का अर्थ यह होता था कि असंख्य अति समर्पित कार्यकर्त्ता संघर्ष में जोड़ लिए गये थे। गुओमिनदांग की स्थायी समिति (प्रिसिड़ियम) के लिए चुने गये पाँच सदस्यों में एक साम्यवादी, ली दाझाओ (Li Dazhao), भी था। केन्द्रीय समिति के लिए चुने गये 24 सदस्यों में पाँच वामपंथी थे और तीन कम्युनिस्ट। बहुमत में न होते हुए भी, वामपंथी और साम्यवादी नीतिगत निर्णय लेने के संदर्भ में कहीं अधिक प्रभावशाली थे। इसके परिणामस्वरूप गुओमिनदांग के भीतर एक मजबूत वामपंथ का उदय हुआ। अर्थात् अपने समूचे रूप में गुओमिनदांग (GMD) अपनी नीतियों और मजदूर और किसान आंदोलन को समर्थन देने में इतना अधिक क्रांतिकारी हो गया जितना वह 1924 से पहले के वर्षों में कभी नहीं रहा था।

तीन सिद्धांतों को जो नयी व्याख्या दी गई उससे भी यह संकेत मिलता है।

1) राष्ट्रवाद में साम्राज्यवाद विरोधी तत्व अब और भी मजबूत हो गया जिसमें एक स्वाधीन संघर्ष पर जोर दिया गया और चीन के भीतर तमाम राष्ट्रवादियों के लिए पूरी समानता की वकालत की गई।

2) जनतन्त्र के नये सिद्धांत में इस बात पर जोर दिया गया कि न केवल विशेषाधिकार प्राप्त और शिक्षित व्यक्तियों को, बल्कि तमाम कामकारों को तथा सामंतवाद और साम्राज्यवाद का विरोध करने वाले तमाम व्यक्तियों और संगठनों को भी, जनतांत्रिक अधिकार दिये जाएं। व्यवहार में, इसमें भाषण की स्वतन्त्रता का अधिकार और बेहतर जीवन के लिए संगठन और संघर्ष करने का अधिकार आते थे।

3) सभी के लिए आजीविका के संबंध में, इसमें भूमि-स्वामित्व के समानीकरण, खेतिहरों का भूमि, पूंजी का नियन्त्रण, और मजदूरों के रहन-सहन की स्थितियों में सुधार जैसी सामंत-विरोधी माँगें शामिल थी। व्यवहार में, इसका अर्थ होता था चंद पूंजीवादियों और जमींदारों के हाथों में राष्ट्रीय संपदा के नियन्त्रण का विरोध करना।

गुओमिनदांग (GMD) के नेतृत्व वाले संयुक्त मोर्चे ने एक जनतांत्रिक संयुक्त सरकार की स्थापना की दिशा में काम करने के लिए राष्ट्रीय बूर्जुआ वर्ग और मजदूरों और किसानों के गठबंधन की माँग की। यह वास्तव में, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (CPC) के कार्यक्रम में रेखांकित आसन्न कामों को पूरा करने की दिशा में उठाया गया कदम ही था।

बोध प्रश्न 1

1) सन यात्सेन अपने आधार को विस्तृत करने और एक शक्तिशाली सैन्य-बल बनाने के लिए सोवियत संघ के विकासों से प्रभावित थे। इसने उनके तीन सिद्धान्तों को कैसे प्रभावित किया?

....

....

....

....

2) जीएमडी और सीपीसी को एक साथ लाने में कोमिंटर्न की सहायता की भूमिका की चर्चा कीजिए।

....

....

....

....

13.4 चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (CPC)

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (CPC) के भीतर सयुंक्त मोर्चे के गठन को लेकर कुछ मतभेद थे। फिर भी विश्व राजनीति पर जोर देने की आवश्यकता को चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने स्वीकार किया। वास्तव में, चीन में कम्युनिस्ट आंदोलन का उदय राष्ट्रवाद के विकास और जनतन्त्र के लिए चलाने वाले आंदोलन के संदर्भ में हुआ था। इसलिए, राष्ट्रीय मुक्ति चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (CPC) का एक प्राथमिक लक्ष्य था। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (CPC) के नेताओं को यह एहसास हो गया था कि चीन को साम्राज्यवादी ताकतों के चंगुल से मुक्त कराये बिना न तो जनतन्त्र आ सकता है और न ही जनता के जीवन को बेहतर बनाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, समय-समय पर इन ताकतों और सामंतों के बीच राजनीतिक समझौता भी रहा। इसलिए, राष्ट्रीय मुक्ति को चीन में सामाजिक मुक्ति के लिए चलने वाले संघर्ष से अलग नहीं किया जा सकता था।

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (CPC) ने देखा कि गुओमिनदांग (GMD) साम्राज्यवाद और युद्ध सामंतवाद दोनों के विरुद्ध था। इसके नेताओं ने यह भी महसूस किया कि 1924 में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की अपेक्षा गुओमिदांग कही अधिक मजबूत शक्ति थी। उसके पास:

- चीनी जनता का कहीं व्यापक आधार और समर्थन था,
- सदस्यों के रूप में कही अधिक बुद्धिजीवी और व्यावसायिक लोग थे,
- प्रशासन सेनाओं के भीतर कहीं अधिक प्रभाव था, और
- कहीं अधिक कोश और साज-सामान था।

इसलिए, गुओमिनदांग (GMD) समान शत्रु, के विरुद्ध संघर्ष में एक उपयोगी मित्र हो सकता था, चाहे वह मजदूरों और किसानों की दैनिक माँगों का प्रतिनिधित्व न करता हो।

इसके अतिरिक्त, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (CPC) के नेताओं की गुओमिनदांग (GMD) के नेता, सन यात सेन, के विषय में अच्छी राय थी। उनके सामने आसन्न राजनीतिक कामों के संदर्भ में, वे इस बात से सहमत थे कि मदभेद की अपेक्षा सहयोग के लिए कहीं अधिक संभावना थी। उन्होंने यह भी महसूस किया कि इस सहयोग का अर्थ आवश्यक रूप से यह नहीं था कि चीनी कम्युनिस्ट पार्टी अपनी गतिविधियों को समान कामों तक ही सीमित रखे। इसलिए, उन्होंने इस स्पष्ट समझ के साथ संयुक्त मोर्चे के पक्ष में निर्णय लिया कि चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (CPC) राष्ट्रीय मुक्ति के लिए और सामंतों के विरुद्ध गुओमिनदांग (GMD) के साथ मिलकर लड़ने के साथ-साथ स्थानीय माँगों को बनाए रखेगी।

इस प्रकार, संयुक्त मोर्चा शत्रुओं को अलग-अलग करने के वास्ते चीनी जनता के व्यापकतम वर्ग को एकजुट करने का एकमात्र तरीका था।

13.5 उपलब्धियाँ और सफलताएँ

सयुंक्त मोर्चा नीति की पहली सफलता तो उसी समय सामने आ गई थी जब बातचीत अभी चल रही थी। सन यात्सेन ने कम्युनिस्ट पार्टी के समर्थन से मार्च 1923 में गुआंगडोंग में एक क्रांतिकारी सरकार का गठन किया। सोवियतों ने गुओमिनदांग (GMD) को फिर से संगठित करने में मदद देने के लिए माइकेल बोरोदिन को और सेना के प्रशिक्षण में मदद देने के लिए जनरल गालेन को भेजा, उनके साथ 40 अन्य सलाहकार भी आए। अगस्त 1923 में, एक युवा जनरल, चांग काई शेक, को सोवियत संघ भेजा गया। सोवियतों की मदद से, सन यात्सेन को कैंटन के निकट वाम्पोआ सैनिक अकादमी स्थापित करने में सफलता मिली। राष्ट्रवादी सेना का गठन एक महत्वपूर्ण उपलब्धि थी, क्योंकि इससे कुछ युद्ध सामंतों की सेनाओं के विरुद्ध पहली महत्वपूर्ण जीत हासिल हो सकी। कैंटन आधार क्षेत्र पर कब्जे का काम 1925 तक पूरा हो गया। राष्ट्रवादी सरकार को अक्तूबर 1926 में वूहान ले जाया गया और गुओमिनदांग (GMD) के सैनिकों ने चीन के एकीकरण के लिए एक सैन्य अभियान शुरू कर दिया। इसे उत्तरी अभियान के नाम से जाना गया।

सयुंक्त मोर्चे की एक और महत्वपूर्ण विशेषता थी 1925-26 के दौरान जनप्रिय आंदोलनों के विकास को बढ़ावा देने में उसकी निर्णायक भूमिका। 1925 के 13 मई के आंदोलन ने विशेषकर पूरे चीन में अनेक हड़तालों, बहिष्कारों और साम्राज्यवाद विरोधी प्रदर्शनों को जन्म दिया। इसे शंघाई की अंतर्राष्ट्रीय बस्ती की पुलिस के हाथों दस प्रदर्शनकारियों के मारे जाने की घटना ने और बल दिया। मजदूरों ने इस आंदोलन में एक प्रमुख भूमिका निभाई। कुछ विद्वानों के अनुसार, इस आंदोलन ने चीनी राजनीतिक जीवन में इतना आमूल परिवर्तन कर दिया कि इसे एक सच्चे क्रान्तिकारी दौर की शुरुआत करने वाला कहा जा सकता है। ब्रिटिश व्यापार इस आंदोलन के दौरान मजदूर वर्ग के कार्यों के कारण ठप्प पड़ गया।

इस क्षेत्र पर नियन्त्रण रखने वाले गुओमिनदांग (GMD) ने हड़ताली मजदूरों का समर्थन किया और उनके लिए धन की व्यवस्था की। छात्र संघों, शंघाई वाणिज्य मंडल और (लघु व्यापार के प्रतिनिधि) नुक्कड़ व्यापारियों के संघों और शंघाई के महासंघ ने साम्यवादियों के इस आह्वान का जवाब दिया कि वे विरोध जताने के लिए खुल कर सामने आ जायें। इस व्यापक विविधता में सयुंक्त मोर्चे की राजनीतिक प्रकृति और संयुक्त मोर्चे की सफलता परिलक्षित हुई। आंदोलन का समर्थन करने वाले सौदागरों और व्यापारियों को विदेशी कारखानों में काम बंद हो जाने से आर्थिक लाभ हुआ क्योंकि इन कारखानों से उनकी होड़ थी।

शंघाई के अलावा, युद्ध सामंतों के नियंत्रण वाले तमाम क्षेत्रों में एकजुटता की हड़तालें हुईः विदेशी कंपनियों पर धावे बोले गये, विदेशी सामान का बहिष्कार किया गया, और राजनीतिक आंदोलन हुए। चीनी जनता के विभिन्न तबकों की एकता इन क्षेत्रों में उसी तरह व्यक्त हुई जिस तरह से शंघाई में हुई थी।

13.6 जन आन्दोलन और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (CPC)

क्रान्तिकारी आन्दोलन के विकास ने मजदूरों में जागृति को भी जन्म दिया। कैंटन की नयी सरकार ने अधिकारिक तौर पर मजदूरों के संघर्ष का समर्थन किया। अनेक नये मजदूर संघ अस्तित्व में आये, बड़े शहरों में जन आंदोलन हुए; राजनीतिक माँगें आम हो गयी; किसान संघों की संख्या भी बढ़ी – ऐसा विशेषकर हुनान, पूर्वी गुआनडोंग और पश्चिमी जियांक्सी में कैंटन सरकार के नियन्त्रण वाले क्षेत्रों में हुआ। लगान कम कराने के लिए संपत्ति स्वामियों के विरुद्ध एक आर्थिक संघर्ष छेड़ने के अलावा, किसानों ने अनाज वितरण पर नियंत्रण का दावा भी पेश किया, कर देने से इंकार कर दिया और जमींदारों की सामाजिक और राजनीतिक सत्ता को भी चुनौती दी। सशस्त्र सेनाओं का भी गठन किया गया। गुओमिंदांग (GMD) के एक किसान आंदोलन प्रशिक्षण संस्थान का प्रायोजन किया जहाँ माओ जेडोंग शिक्षक था। किसान आन्दोलन के 1926 में आयोजित पहले राष्ट्रीय सम्मेलन में दस लाख से भी अधिक सदस्यों का प्रतिनिधित्व हुआ। युद्ध सामंतों के गढ़, उत्तर में भी किसान आंदोलन की प्रगति देखने में आयी। जून 1927 तक पूरे देश में कुल मिलाकर किसान संघों के लगभग 9,150,000 सदस्य थे।

इन जनप्रिय आंदोलनों को आयोजित करने में क्योंकि कम्युनिस्ट ही सबसे अधिक सक्रिय थे इसलिए 1921-27 के बीच के दौर में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (CPC) को सदस्य संख्या और उसकी राजनीतिक शक्ति में भी जबरदस्त वृद्धि देखने मे आयी। 1925 के 13 मई के आंदोलन के परिणामस्वरूप उसकी सदस्य संख्या छह महीनों में दस गुना बढ़ गयी। नवम्बर 1925 में यह संख्या 10,000 हो गयी, जबकि उस वर्ष के प्रारंभिक महीनों में यह केवल 1,000 थी, जुलाई 1926 तक सदस्य संख्या बढ़कर 30,000 हो गयी और 1927 के प्रारंभिक महीनों में यह 58,000 हो गयी।

युवा कम्युनिस्ट लीग का गठन भी बदल गया। 1925 से पहले, 90 प्रतिशत सदस्य छात्र हुआ करते थे, लेकिन नवम्बर 1926 तक केवल 35 प्रतिशत छात्र रह गये। अधिक संख्या मजदूरों की हो गयी। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (CPC) की जनता को लाभबंद करने की क्षमता में भी जबरदस्त वृद्धि हुई, जब च्यांग काई शेक की क्रांतिकारी सेना ने अपना अभियान छेड़ा तो चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (CPC) ने ही उस सैनिक अभियान को एक ठोस जनाधार और राजनीतिक शक्ति देने के लिए 1,200,000 मजदूरों और 800,000 किसानों को संगठित किया।

सोवियत लाल सेना के स्वरूप पर, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (CPC) ने क्रांतिकारी सेना में राजनीतिक कार्य की व्यवस्था लागू की, इस अभियान की अंततः सफलता में यह एक महत्वपूर्ण कारक था। क्रांतिकारी सेना अपने उत्तरी अभियान में जहाँ-जहाँ से निकली, उसे मजदूरों और किसानों का सक्रिय समर्थन मिला। जब सेना ने कूच किया तो गुआंगझाउ-हांग कांग में हिस्सा ले चुके मजदूरों ने परिवहन, प्रचार और चिकित्सा इकाइयों को संगठित किया, हजारों लोगों ने सेना के साथ प्रयाण भी किया। हुनान और हुपी में भी मजदूरों और किसानों ने इन प्रांतों पर कब्जे को संभव करने में काफी साथ दिया।

संयुक्त मोर्चे के दौरान क्रांतिकारी विकास अपने शीर्ष पर शंघाई के साहसिक मजदूर विद्रोह में पहुँचा। मजदूर विद्रोहों की श्रृंखला में यह तीसरा विद्रोह था जिसकी शुरुआत 21 मार्च, 1927 को चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (CPC) के नेतृत्व में एक आम हड़ताल के आह्वान के साथ हुई। अगले दिन तक शहर क्रांतिकारियों के हाथों में था, और यह काम जनरल च्यांग काई शेक की सेना के शहर में घुसने या एक भी गोली चलने से पहले हो चुका था। मजदूरों ने रेलगाड़ियों को रोक दिया था, पानी और बिजली की आपूर्ति काट दी थी, पुलिस मुख्यालय, दूरभाष और तारघर पर कब्जा कर लिया था। समूचे मजदूर वर्ग के समर्थन के बूते पर चीन के सबसे बड़े व्यापारिक और औद्योगिक शहर को ठप्प कर दिया गया था। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (CPC) ने शंघाई के नागरिकों की एक विशाल रैली आयोजित की और शंघाई जनता की सरकार का निर्वाचन किया। अंततः 24 मार्च, 1927 को नानजिंग को मुक्त करा लिया गया।

13.7 विघटन और दमन

सयुंक्त मोर्चे के ढ़ांचे के भीतर क्रान्तिकारी आंदोलन के इस शीर्ष के परिणामस्वरूप 24 मार्च,1927 को खुद मोर्चे का ही विघटन हो गया। इंग्लैंड, अमेरिका, जापान और फ्रांस के युद्धपोतों ने नानजिंग पर बमबारी करके 2,000 सिपाहियों और नागरिकों को या तो मार दिया या घायल कर दिया। यह घटना चीनी क्रांति को कुचलने के लिए साम्राज्यवादी देशों के व्यापक स्तर के और संकल्पित हस्तक्षेप की द्योतक थी।

दूसरी ओर, इस जनप्रिय आन्दोलन के आगे बढ़ने के साथ-साथ, एक दक्षिणपंथी, प्रतिक्रियावादी शाखा भी गुओमिनदांग (GMD) के भीतर उभर आयी थी जो इन आन्दोलनों के विरुद्ध थी। सन यात्सेन की 1925 में मृत्यु हो चुकी थी, उसकी मृत्यु के बाद च्यांग काई शेक गुओमिनदांग (GMD) के सबसे महत्वपूर्ण नेता के रूप में उभरा। च्यांग काई शेक सेना का प्रधान सेनापति भी था, इसलिए उसकी राजनीतिक स्थिति अत्यधिक महत्वपूर्ण थी। उसने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (CPC) और जनप्रिय आंदोलनों के विरोधियों का साथ देने का निर्णय लिया और दक्षिणपंथी शाखा का नेतृत्व संभाल लिया। 12 अप्रैल 1927 को उसने शंघाई के मजदूर संघों पर अचानक हमला करवा दिया। मजदूरों के हथियार जब्त कर लिए गये और हजारों की संख्या में उन्हें मौत के घाट उतार दिया गया। इसके बाद दूसरे क्षेत्रों में भी उसी प्रकार की पाशविक घटनाएँ हुई। हड़तालों पर पाबंदी लगा दी गई, किसान संघों को समाप्त कर दिया गया, साम्यवादियों की धर-पकड़ शुरू हो गयी, बीजिंग स्थित सोवियत दूतावास पर हमला किया गया और सोवियत सलाहकारों को निकाल बाहर किया गया। 15 जुलाई, 1927 को, गुओमिनदांग ने गुओमिंदांग (GMD) से साम्यवादियों के औपचारिक निष्कासन की घोषणा कर दी। कम्युनिस्टों को चीन के दूरस्थ प्रातों में धकेल दिया गया। जियांग जिशी ने 1928 में बियांग सेना को पराजित किया और नाममात्र के लिए चीन का एकीकरण किया जिसे कुछ लोगों ने नानजिंग का दशक कहा। देश के बड़े भू-भाग, हालांकि अभी भी स्थानीय गर्वनर या युद्ध सांमतों के निमन्त्रण में बने रहे। सैन्य टकराव जैसे 1930 का चीन तिब्बत युद्ध या जिना जियांग में जहाँ गर्वनर ने 1931 में सोवियत संघ के साथ गुप्त रूप से संधि पर हस्ताक्षर किये, चलते रहे। जियांग जिशी ने गर्वनर के विरुद्ध एक युईगुवेर विद्रोह का समर्थन किया।

13.8 विघटन के कारण

जीएमडी और सीपीसी के मध्य मोर्चे के विघटन का कारण उनकी अलग-अलग वैचारिक स्थिति और उनके अलग-अलग सामाजिक आधारों में निहित था। गुओमिनदांग (GMD)

के सदस्यों में केवल छोटे बूर्जुआ (निम्न मध्यम और मध्यम वर्ग) ही नहीं बल्कि जमींदार, शहरी सौदागर और वित्तदाता वर्ग के लोग भी शामिल थे जो क्रांतिकारी सेनाओं के बनाये क्रांतिकारी कार्यक्रम के विरुद्ध थे क्योंकि इस कार्यक्रम का अर्थ होता था विद्यमान सामाजिक व्यवस्था में बदलाव। वास्तव में, संयुक्त मोर्चे की आर्थिक सफलता से उन हताश तत्वों के छिपे विरोध सामने आ गये जिन्हें राष्ट्रीय एकीकरण के कार्यक्रम ने अस्थायी तौर पर एक कर रखा था।

यहाँ यह समझना आवश्यक है कि संयुक्त मोर्चा कोई स्थिर गठबंधन नहीं था। इसके अलग-अलग घटक युद्ध सांमतवाद और साम्राज्यवाद के विरुद्ध एकजुट होते हुए भी सामाजिक मुद्दों पर अलग-अलग दृष्टिकोण रखते थे। इससे पहले संयुक्त मोर्चे में वामपंथी और साम्यवादी घटक मजबूत और विकासशील थे, लेकिन वे इतने मजबूत नहीं थे कि किसी आमूल सामाजिक बदलाव को सुनिश्चित कर सकते। जमींदारों और उद्योगपतियों के लिए मजदूर और किसान बड़े खतरे थे क्योंकि उन्हें साम्राज्यवादियों से उनको कम से कम अपने विशेषाधिकारों के लिए तो कोई खतरा नहीं था। इसलिए, जब मजदूरों और किसानों के आंदोलनों ने जोर पकड़ा तो, उसी अनुपात में चीन के विशेषाधिकार प्राप्त तबकों का प्रतिनिधित्व करने वाली दक्षिणपंथी शाखा चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (CPC) और मजदूरों और किसानों के विरोध में साम्राज्यवादियों और युद्ध सामंतों के शिकंजे में आ गयी।

क्रान्तिकारी आंदोलन के मुख्य आधार, बड़े शहर, असमान संधियों की व्यवस्था के भी मुख्य आधार थे, क्राति का विरोध भी शहरों में बहुत तगड़ा था। च्यांग काई शेक को समर्थन देने वाली सशस्त्र सेनाओं और सामाजिक शक्तियों का जमाव भी यहीं था। मजदूरों की हड़तालों की सफलता ने ही चीनी बूर्जुआ वर्ग को अपने 1924 के गठबंधन की उपादेयता पर संदेह प्रकट करने को बाध्य कर दिया। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि 1924 के कार्यक्रम के पीछे चलने वाली राष्ट्रवादी आंदोलन ने उन सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था के स्तंभों पर खुलकर प्रहार किया जिन पर विदेशी प्रभुत्व टिका हुआ था।

विघटन का कारण बनने वाला एक निर्णायक मुद्दा कृषि का मसला भी था, सामंतवाद के विरुद्ध ग्रामीण अंचलों में होने वाला संघर्ष एक कटु वर्ग संघर्ष था। जमीदारों ने किसान आन्दोलन पर प्रहार करने में कोई देरी नहीं की और गुओमिंदांग (GMD) की अफसर कोर के वे तबके भी जल्दी ही उनके साथ हो लिए जो उसी सामाजिक वर्ग से थे, वे कृषि सुधारों के विरोध में खुलकर सामने आ गए।

मजदूरों और किसानों के विरोध करने या संघ बनाने के अधिकारों पर पाबंदी लगाने के लिए कानून लागू कर दिये। गुओमिनदांग (GMD) भी राजनीतिक जनतन्त्र की पोषक नहीं रह गई। कामगारों के आदोंलनो की संभावी शक्ति और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (CPC) के साथ अपने संबंधों का इस्तेमाल करके, गुओमिनदांग अब राजनीतिक दृष्टि से एक मजबूत स्थिति में था। उनके नियंत्रण में अच्छा खासा क्षेत्र था और युद्ध सामंतों से स्वतंत्र पश्चिमी ताकतों के साथ उसके संबंध भी थे। उसे लगा कि वह चीनी कम्युनिस्ट पार्टी और चीनी मजदूरों और किसानों के बिना भी अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकता था। गुओमिनदांग भविष्य के घटनाक्रम को जो दिशा देना चाहता था उसमें सामाजिक व्यवस्था को बदलना शामिल नहीं था।

गुओमिनदांग (GMD) के हाथों जनतांत्रिक शक्तियों पर प्रहार के साथ ही पहले संयुक्त मोर्चे का अन्त हो गया। चीनी क्रान्ति को तो एक जबरदस्त धक्का लगा, लेकिन संघर्ष का यह अनुभव कीमती रहा। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (CPC) को कई राजनीतिक सबक सीखने को मिले। असफलता के कारणों पर व्यापक बहस हुई और उनका विश्लेषण भी किया गया। सच में तो खुद असफलता ने ही क्रान्तिकारी शक्तियों के पुनर्गठन और क्रान्ति के लिए एक नयी नीति के निर्माण की प्रक्रिया को गति दी।

जियांग जिशी द्वारा कम्युनिस्टों के हिसंक निष्कासन ने यह सुनिश्चित किया कि आगे आने वाले वर्षों में चीनी राजनीति दो अलग-अलग और सुनिश्चित दिशाओं में विकसित होगी। संयुक्त मोर्चे की अवधि के दौरान जीएमडी और सीपीसी दोनों राजनैतिक बदलाव और सामाजिक रूपान्तरण के पक्ष में खड़े थे। अब जीएमडी नानजिंग में चीन की औपचारिक सरकार बन गई और उसने राष्ट्रवाद की शक्तियों का प्रतिनिधित्व किया। सीपीसी क्रांतिकारी बदलाव के लिए संघर्ष करती रही जिसका एक मुख्य अवयव उग्र कृषि सुधार था। इसने इसके अलावा दूरस्थ क्षेत्रों में आधार निर्मित करने की रणनीति अपनाई ताकि स्वयं को सुरक्षित रखते हुए यह अपने कृषि सुधार लागू कर पाती।

बोध प्रश्न 2

1) चीनी समाज और राजनीति पर संयुक्त मोर्चे के प्रभाव की सौ शब्दों में चर्चा कीजिए।

....

....

....

....

....

2) जीएमडी और सीपीसी के बीच मोर्चे के टूटने के कारणों की चर्चा कीजिए।

....

....

....

....

13.9 चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (CPC) द्वारा एक नयी रणनीति का विकास

सन् 1927 में कैंटन और शंघाई में मजदूर वर्ग के विद्रोहों की पराजय के बाद, और संयुक्त मोर्चे के विघटन के साथ, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने यह निष्कर्ष निकाला कि किसान के बीच किया गया काम अत्यधिक फलदायी साबित हुआ था। हुनान और गुआंगड़ोंग की सफलताओं को अपना आधार बनाते हुए चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (CPC) ने ''किसान क्रान्ति'' की नयी रणनीति को अपनाया। उसका सोचना था किः

- रूस के विपरीत, चीन की क्रांति देहातों से शहरों की ओर जायेगी, शहरों से देहातों की ओर नहीं,
- दूसरी साम्यवादियों पार्टियों के विपरीत चीनी कम्युनिस्ट पार्टी सर्वहारा पार्टी न होकर किसानों की पार्टी होगी, और
- चीन में राष्ट्रीय मुक्ति और सामाजिक रूपांतरण का आधार किसान राष्ट्रवाद होगा।

सक्षेंप में, यह नयी रणनीति चीन में किसान को क्रांति की अग्रणी शक्ति के रूप में स्वीकार करती थी। उस संबंध में यह तर्क दिया जाता है कि सयुंक्त मोर्चा ''मास्को दिशा'' थी

(क्योंकि यह सोवियत नेतृत्व और सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी (CPSU) की सलाह पर था) और नयी रणनीति ''मास्को दिशा'' नीति से अलग होने की प्रतीक थी। यह क्रान्ति का एक विशिष्ट ''चीनी मार्ग'' था। किसान वर्ग पर माओ जेडोंग के लेखों, विशेषकर 1926 में लिखित ''हूनान में किसान आंदोलन पर रपट'', को इस नयी नीति का आधार बताया जाता है।

फिर भी, स्थिति इतनी सरल नहीं थी। पहले तो, प्रत्येक नया क्रान्तिकारी संघर्ष किसी पूर्ववर्ती संघर्ष की नकल नहीं हो सकता, और 1927 से पहले चीनी साम्यवादी या सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी (CPSU) भी ऐसा नहीं सोचते थे। इसके अतिरिक्त, ''मास्को दिशा'' या ''चीनी मार्ग'' जैसा कोई स्पष्ट विभाजन भी नहीं था। चीनी साम्यवादी जिन सवालों या मसलों पर बहस करते थे वे वही मसले थे जिन पर रूसी साम्यवादियों ने अपने संघर्ष के दौरान बहस की थी। इनमें से कुछ मसले इन मुद्दों से संबंधित थे :

- अंतर्राष्ट्रीय स्थिति का प्रभाव और अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था या ढाँचे में उनके देश की भूमिका और स्थान,
- उनके देशों में राज्य का वर्ग चरित्र,
- देश में विभिन्न सामाजिक और राजनीतिक शक्तियों का सह-संबंध और संतुलन,
- पश्चिमी यूरोप की अपेक्षा उनके समाजों का पिछड़ापन,
- उनके क्रान्तिकारी आंदोलन पर उसके विभिन्न चरणों में इस पिछड़ेपन के परिणाम, और
- इस मुद्दे पर उनके विचार-विमर्शों में किसान मजदूर गठबंधन का मसला एक महत्वपूर्ण पहलू होना।

जब चीनी साम्यवादी (या सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी भी) चीन में क्रान्तिकारी बदलाव के लिए अपने कार्यक्रम पर विचार-विमर्श करते थे तो रूसी अनुभव की भिन्नताओं और समानताओं पर गौर करते थे – ठीक वैसे ही जैसी रूसी साम्यवादियों ने उससे पहले अपनी क्रान्ति करते समय रूस और पश्चिमी यूरोपीय देशों के बीच भिन्नताओं और समानताओं पर गौर किया था। या, ठीक वैसे ही, जैसे जर्मनी में पूंजीवादी विकास के अध्येताओं ने इंग्लैंड और जर्मनी में आर्थिक विकास के बीच भिन्नताओं और समानताओं पर गौर किया था। जैसे इग्लैंड पूँजीवादी विकास का अध्ययन करने के लिए एक पक्का आदर्श था, ठीक उसी तरह सोवियत रूस सफलतापूर्वक समाजवादी क्रान्ति करने वाला पहला और एकमात्र देश था। इसलिए, वह उन सभी के लिए एक आदर्श था जिनका अंतिम लक्ष्य अपने देशों में समाजवाद का निर्माण करना था।

चीनी साम्यवादियों ने यह तो गौर किया ही कि रूसी अनुभव की तरह उनके देश का सामान्य पिछड़ापन एक कमजोर बूर्जुआ वर्ग का कारण बना, साथ ही उन्होंने यह देखा कि उनके पास साथ देने वाला एक सोवियत संघ जैसा एक विशाल देश था जबकि रूस अपनी क्रान्ति के समय अकेला ही था। उन्होंने यह भी देखा कि रूस तो अपनी क्रान्ति से पहले एक साम्राज्यवादी देश था, जबकि चीन एक उपनिवेश था। इन दो महत्वपूर्ण कारकों ने क्रान्ति की उनकी रणनीति में नये आयाम जोड़े।

फिर भी, चीनी साम्यवादियों ने गुओमिनदांग (GMD) के साथ संयुक्त मोर्चे के अपने अनुभव से जो सबक लिए वे उनकी राजनीति गतिविधि की भावी दिशा तय करने वाले सबसे महत्वपूर्ण कारक रहे।

उन्होंने यह महसूस किया कि क्रान्ति के पहले जनतांत्रिक चरण, अर्थात् राष्ट्रीय एकीकरण और जनतन्त्र के लिए होने वाले संघर्ष, का नेतृत्व मजदूर वर्ग के हाथों में ही होना चाहिए। माओ जेडाँग ने हूनान आंदोलन पर अपनी रपट में किसान वर्ग के निर्णायक और पूरी तौर पर आवश्यक, रूप से इसमें शामिल होने की बात कही। साथ ही माओ ने उन सामाजिक, राजनीतिक, वैचारिक और धार्मिक बेड़ियों को भी रेखांकित किया जो किसानों को अधंकार और पिछड़ेपन से जकड़े हुए थी। माओ ने भी यह समझ लिया था कि बेहद दमन के बावजूद मजदूर वर्ग के पास अपने राजनीतिक पिछड़ेपन को दूर करने के कई आसान अवसर थे, क्योंकि उनके पास शहरों में संगठन के लिए नये विचारों और अवसरों के संपर्क में आने के लिए कहीं अनुकूल स्थितियाँ थी।

इसलिए, यह मान लेना गलत होगा कि माओ केवल किसान वर्ग के अग्रणी शक्ति होने की बात सोचता था, चीनी साम्यवादी भी यह महसूस करते थे कि जहाँ तक समाजवाद के उनके अंतिम लक्ष्य का संबंध था, किसान वर्ग निजी संपत्ति की समाप्ति के लिए होने वाले किसी भी आंदोलन में नेतृत्वकारी भूमिका नहीं ले सकता था। उसका बहुत अधिक दांव पर था। और उद्योग के क्षेत्र में निजी संपत्ति की समाप्ति करने में जितना समय और संघर्ष लगता था, उससे कहीं लंबा समय और संघर्ष संपत्ति के सामूहीकरण की समूची प्रक्रिया में लगने वाला था। ऐसा इसलिए था क्योंकि मजदूर वर्ग का संपत्ति पर कोई दावा नहीं था। उसका दावा तो केवल उसकी मेहनत के पूरे फल पर था। इसलिए, जब चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (CPC) ने किसान वर्ग की ओर अपना ध्यान मोड़ा तो, वह पहले की अपेक्षा में केवल भूल-सुधार कर रही थी : हूनान के प्रयोगों के समय तक चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने केवल मजदूर वर्ग पर ही ध्यान केन्द्रित किया था।

सयुंक्त मोर्चे के दौर के बाद के समय में जो किसान वर्ग पर जोर दिया गया उसका आधार वास्तव में खुद संयुक्त मोर्चे के अनुभव से आने वाली मान्यता थी। यह बात महसूस की गयी कि:

- अकेला मजदूर वर्ग इतना मजबूत नहीं था कि वह जनतांत्रिक क्रान्ति कर पाता, और
- बुर्जुआ वर्ग की ढुल-मुल स्थिति को देखते हुए मजदूर-किसान गठबंधन जनतन्त्र और सामाजिक रूपांतरण की एक मात्र बुनियाद थी – जैसा कि रूस में हुआ था।

वास्तव में, चीन में सामंतवाद-विरोधी कामों में जमींदारी के विरुद्ध, और कृषि सुधार के पक्ष में, होने वाले संघर्ष की जो स्थिति थी उसमें क्रान्ति की जीत केवल तभी संभव हो सकी जब किसानों को क्रान्तिकारी गठबंधन के एक भिन्न घटक के रूप में मिलाया जा सका।

यह भी महसूस किया गया कि अब के बाद क्रान्तिकारी संघर्ष एक सशस्त्र संघर्ष होना चाहिए। क्रान्तिकारियों को 1927 में इसलिए पराजय का मुंह देखना पड़ा था क्योंकि उनके पास अपनी सशस्त्र सेनाएं नहीं थीं, क्रान्तिकारियों के शत्रु वर्ग में अब केवल पुराने युद्ध सामंत ही नहीं थे बल्कि गुओमिनदांग (GMD) के सैनिक भी थे, इसलिए अगर शत्रु को पराजित करना था तो यह महत्वपूर्ण था कि एक नयी जन सेना का गठन किया जाये। इसका गठन मजदूरों और किसानों में से ही किया जा सकता था, लेकिन प्राथमिक तौर पर किसानों में से, जो चीन में बहुसंख्यक थे, वास्तव में, कृषि सुधार की गतिशीलता के लिए किसान वर्ग पर निर्भरता आवश्यक थी।

इसके अतिरिक्त, चीन के अभी तक विभिन्न साम्राज्यवादी ताकतों और युद्ध सामंतों के प्रभाव क्षेत्रों में बँटे होने के कारण, भौगोलिक क्षेत्रों, और इन क्षेत्रों में शत्रुओं के अलग-थलग होने, के संदर्भों में यह संघर्ष अक्सर स्थानीय रंग ले लेता था। राजनीतिक सत्ता का इस्तेमाल केवल स्थानीय स्तर पर और विभिन्न स्थानों में इन संघर्षों के सफल या असफल होने की स्थितियों में ही हो सकता था। इस तरह के संघर्ष के तर्क को देखते हुए, हड़ताल की जगह छापामार युद्ध राजनीतिक कार्यवाही का प्रमुख रूप हो गया।

इसके परिणामस्वरूप विभिन्न कथित ''लाल आधारों'', ''सोवियत आधारों'', ''मुक्त क्षेत्रों'' और ''क्रान्तिकारी आधारों'', की स्थापना हो गयी। पहले लाल आधार दक्षिण में, दो या तीन प्रांतों की सीमाओं के भीतर दूर-दराज के और लगभग अगम्य क्षेत्रों में कायम हुए। पहले पहल तो, इन आधारों को केवल क्षणिक उपयोगिता के रूप में देखा गया यानि सरकारी नियंत्रण से दूर के क्षेत्रों में बचाव और ताकत हासिल करने के एक तरीके के रूप में। लेकिन बाद में इन्हें एक नीति का रूप में देखा गया, जिसने अंततः 1949 में समूचे चीन का साम्यवादियों के नियंत्रण में आना संभव कर दिया।

संघर्ष के इन नये तरीकों पर रातो-रात सहमति नहीं बन गयी। ये तरीके तो 1924-1927 के दौरान होने वाले मजदूरों और किसानों के आंदोलनों के, और पराजय के कारणों के क्रमबद्ध विश्लेषण का परिणाम थे। साम्यवादियों को देहातों और शहरों में वर्ग संबंधों का कहीं अधिक व्यापक विश्लेषण करना पड़ा। उन्हें निम्नलिखित बातें भी सीखनी पड़ीः

- बूर्जुआ वर्ग के विभिन्न तबकों में भेद करना,
- अपनी नीतियों के लिए कहीं अधिक व्यापक समर्थन बनाना,
- व्यापक समर्थन को ध्यान में रखते हुए नीतियाँ बनाना, इत्यादि।

उन्होंने निम्न बिदुओं पर व्यापक बहस कीः

- मजदूर वर्ग और किसान वर्ग के बीच गठबंधन का सटीक रूप क्या होना चाहिए,
- शहरों और देहातों में अपनाये जाने वाले संघर्ष के विभिन्न रूप, और
- विभिन्न चरणों में मजदूर वर्ग और किसान वर्ग का सापेक्ष महत्व।

सीपीसी ने महसूस किया कि श्रमिक वर्ग अपने आप स्वयं से जनवादी क्रांन्ति को लाने के लिए शक्तिशाली नहीं था इसलिए किसान वर्ग और सैन्य शक्ति सफलता के लिए महत्वपूर्ण थे। इसके परिणामस्वरूप विभिन्न ''लाल आधार क्षेत्र'', ''सोवियत आधार क्षेत्र'', ''मुक्त क्षेत्र और ''क्रांतिकारी आधार क्षेत्र'' जैसे नामों से जाने जाने वाले आधार क्षेत्रों का निर्माण या गठन किया गया। पहले लाल आधार क्षेत्र दक्षिण में, दो या तीन प्रान्तों के सीमावर्ती क्षेत्र में, दूरस्थ और लगभग दुर्गम क्षेत्रों में स्थित थे।

13.10 जियांगक्सी सोवियत

1927 में गुओमिनदांग (GMD) द्वारा मजदूरों और किसानों के दबाए जाने के उपरान्त माओ ने अक्तूबर 1927 में जियांगक्सन पर्वतों में पहला क्रान्तिकारी आधार स्थापित किया। लेकिन (GMD) की घेराबन्दी के कारण, 1928-29 की सर्दियों के उपरान्त क्रान्तिकारियों को ऐसे क्षेत्रों की ओर कूच किया जहाँ पर पहले से ही किसान आन्दोलन विकसित थे और जिससे उनको मजबूत सामाजिक समर्थन उपलब्ध हो सकता था। 1930 की गर्मियों तक इस तरह के 15 क्षेत्र केन्द्रीय चीन में स्थापित हो चुके थे। चीन की सरकार के लिए इन दूर-दराज के क्षेत्रों में हस्तक्षेप करना कोई सरल कार्य न था। जिंयागक्सी क्षेत्र सबसे महत्वपूर्ण था और चीन का प्रथम सोवियत गणतन्त्र बना।

जिंयागक्सी में जमींदारों की सशस्त्र सेनाएं अन्य किसी दक्षिणी प्रांत की अपेक्षा काफी कमजोर थी। यह अपेक्षाकृत किसी तरह के साम्राज्यवादी प्रभाव से मुक्त था और किसी भी क्षेत्र की तुलना में यहाँ का किसान आंदोलन काफी व्यापक था।

इस नये सोवियत गणतन्त्र का गठन 1931 में किया गया और माओ जेडाँग इसका अध्यक्ष बना। इसको ''सर्वहारा तथा किसानों का जनवादी अधिनायकत्व'' कहकर परिभाषित किया गया।

ग्रामीण-चीन की वर्ग संरचना का विश्लेषण करते हुए माओ ने स्पष्ट किया कि क्रांति के मुख्य शत्रु जमींदार थे क्योंकि कृषि की सामन्ती व्यवस्था तथा सामन्ती सम्पत्ति व्यवस्था को बनाए रखने के लिए वे प्रत्यक्ष तौर पर दावेदार थे। ये ग्रामीण परिवारों के मात्र 10 प्रतिशत थे और इनके पास आधे से कुछ अधिक भूमि थी तथा ये ही अधिकतर ऐसे ग्रामीण थे जो खेती नहीं करते थे।

ग्रामीण मजदूरों के साथ-साथ किसानों को धनी, मध्यम एवं गरीब किसानों की श्रेणी में रखा जा सकता था।

- धनी किसान ऐसे किसान थे जो कृषि कार्यों की व्यस्तता के समय परिवार से बाहर के लोगों को मजदूरी पर रखते थे और उनके पास औसतन मध्यम किसान की अपेक्षा कुछ अधिक भूमि होती थी।
- मध्यम किसान वे थे जो सामान्य वर्ष में अपनी आवश्यकताओं को किसी को मजदूरी पर रखकर या फिर दूसरे के यहाँ पर कार्य को करके पूरा करते थे।
- गरीब किसान परिवार वे थे जो अपने भरण-पोषण के लिए एक या एक से अधिक सदस्य की मजदूरी पर निर्भर करते थे और ऐसे किसानों के पास माध्यम किसानों की अपेक्षा कम भूमि होती थी।

गुओमिनदांग के साथ सयुंक्त मोर्चे के भंग हो जाने एवं पूंजीपति वर्ग के द्वारा इसके साथ सहयोग करने के कारण, माओ ने यह महसूस किया कि कम्युनिस्टों के इस अलगाव की भरपाई धनी किसानों के साथ सहयोग करने से पूरी की जा सकती थी और इस सहयोग को इस वास्तविकता के साथ प्राप्त किया गया कि निर्धन किसानों ने आंदोलन को मुख्य आधार प्राप्त कराया था। किसानों ने एक वर्ग के रूप में क्रांतिकारी भूमिका का निर्वाह किया जो पूंजीपति वर्ग नहीं कर सकता था।

1931 के कृषि कानून द्वारा केवल जमींदारों की भूमि का अधिग्रहण किया जा सका। इस भूमि अधिग्रहण को बगैर किसी मुआवजे के किया गया। सोवियत जो किसानों एवं सैनिकों के निर्वाचित संगठन थे और उन्होंने निर्धन तथा मध्यम किसानों को अधिग्रहीत की गई भूमि का वितरण किया।

भूमि का पुनर्वितरण समान वितरण के आधार पर किया गया और इस वितरण का आधार किसान परिवार के सदस्यों तथा श्रम पर आधारित था। जो भूमि मंदिर एवं अन्य इस तरह की धार्मिक संस्थाओं से संबंधित थी उसको भी किसानों के बीच वितरित किया गया। धनी किसान को इस शर्त पर भूमि प्रदान की गई कि वह इस भूमि पर कार्य बिना किसी मजदूर के करेगा और क्रान्तिकारियों के विरुद्ध होने वाली किसी भी तरह की गतिविधि में भाग नहीं लेगा। ऐसे धनी किसानों के लिए राहत की व्यवस्था की गई जो अपनी अधिग्रहित की गई भूमि को वापस खरीदना चाहते थे या ऐसे मध्यम किसानों के लिए भी जो अपनी जोत को और बढ़ाना चाहते थे। अन्ततः यदि किसानों का बहुमत इसको स्वीकार कर लेता है तब समान वितरण के नये कृषि सुधार को लागू किया जा सकता था।

यह महसूस किया गया कि ऐसा मध्यम किसान जो दूसरों का शोषण नहीं करता – वह भूमि के पुनर्वितरण की प्रक्रिया में विशेष रुचि रखता था क्योंकि इससे उसे कुछ और भूमि प्राप्त होने की सम्भावना थी। क्योंकि इस किसान का शोषण एवं दमन साम्राज्यवादी

शक्तियों, जमींदारों एवं पूंजीपतियों के द्वारा किया जाता था। इसलिए इस वर्ग को राजनैतिक तौर पर शिक्षित करने पर बल दिया गया जिससे वह जनवादी क्रान्ति की शक्तियों का समर्थन करने लगे। यही कारण था कि कृषि क्रान्ति की नीति के अन्तर्गत मध्यम किसानों के साथ एकता करने पर बल दिया गया। इसके अतिरिक्त जब भूमि के पुनर्वितरण को पूरा कर दिया जाएगा तब ग्रामीण अंचलों में वह भी साधारण जनता का एक भाग हो जाएगा। इस तरह की कृषि क्रान्ति से यह लाभ होगा कि यह मध्यम किसानों के हितों का उल्लघंन न कर सकेगी।

धनी किसान दूसरों का शोषण करते थे परन्तु जमींदारों की तुलना में उनके पास न केवल कम भूमि थी बल्कि उनका राजनीतिक एवं सामाजिक प्रभाव भी बहुत कम था। उनका जो कुछ मजबूत सम्पर्क एवं प्रभाव था वह केवल गाँव के किसानों तक ही सीमित था न कि राज्य के ढाँचे पर। इस नीति के द्वारा तथा धनी किसानों की शक्ति को सीमित करने, तथा धनी किसान अर्थव्यवस्था को पूरी तरह उखाड़ने की अपेक्षा उसको बने रहने का अवसर प्रदान किया गया।

जमींदारों की भूमि का अधिग्रहण करके उन्हें समाप्त किया गया और उनकी भूमियों को नये स्वामियों को प्रदान कर नयी अर्थव्यवस्था के नियमों के आधार पर उत्पादन के लिए उपयोग करना था अर्थात् मध्यम तथा निर्धन किसान इसके स्वामी होंगे। बहुत से जमींदार जो हिंसा के दौरान मारे गये वे बदनाम किस्म के थे या फिर उस समय जबकि उन्होंने क्रान्तिकारी प्रक्रिया को विरोध किया। वास्तव में बहुत बड़ी संख्या में निर्धन किसान एवं साम्यवादी सामाजिक रूपांतरण के लिए हुए संघर्ष के दौरान मारे गये।

इन परिवर्तनों के कारण निर्धन एवं मध्यम किसानों को अधिक भूमि प्राप्त हुई जिससे कि वे ग्रामीण अचंलों में महत्वपूर्ण कारक हो गये। निर्धन किसानों को अधिक भूमि प्राप्त हुई क्योंकि इन परिवर्तनों से पूर्व उनके पास काफी कम भूमि थी।

कृषि क्रान्ति का लक्ष्य उत्पादन में वृद्धि करना भी था। वास्तव में स्वामित्व के संबंधों में हुए परिवर्तनों के फलस्वरूप उत्पादन की प्रक्रिया में भी एक निर्णायक बदलाव आया। इसको निम्न प्रकार से रेखांकित किया जा सकता है:

- उत्पादन के पिछड़े एवं सामन्ती तरीकों से भूमि की विशाल मात्रा को मुक्त करके,
- कड़े परिश्रम तथा उत्पादन में वृद्धि करने के लिए सम्पूर्ण किसान वर्ग को प्रोत्साहित करके, और
- किसानों के बीच बाजार को बढ़ाकर जिससे कि उनको कृषि उत्पादनों के बेहतर दाम प्राप्त हो और इस कारण से उनकी खरीदने की शक्ति अधिक हो जाये। जियागंक्सी सोवियत एक अल्पकालिक प्रयोग था लेकिन इसके अनुभव ने सीपीसी की क्रांतिकारी रणनीति के निर्माण में योगदान दिया।

13.11 जियांगक्सी में नई राजनीति

न केवल जियांगक्सी आधार में अपितु सभी लाल क्षेत्रों में कृषि सुधार का महत्वपूर्ण पक्ष खेतिहर मजदूरों की यूनियनों तथा अन्य दूसरे संगठनों को संगठित करना था। इन जन संगठनों तथा यूनियनों ने कृषि सुधार को लागू करने में सक्रिय तौर पर भाग लिया। उन्होंने स्थानीय सोवियतों के साम्यवादी अधिकारियों तथा पार्टी कार्यकताओं के साथ मिलकर इस क्षेत्र में कार्य किया था। भूमि का एक बार अधिग्रहण करने के पश्चात् उसको श्रेणीबद्ध किया गया और फिर उसको वितरित कर दिया गया। यह सम्पूर्ण प्रक्रिया खुली

एवं सार्वजनिक थी। किसानों तथा सैनिकों को उन सोवियतों के लिए निर्वाचित किया गया जिसने मजदूरों एवं किसानों की नई सरकार के लिए संगठनात्मक ढ़ाँचा तैयार किया। जो मध्यम वर्गीय किसान जिला तथा कस्बों के स्तरों की स्थानीय सरकार में कार्य कर रहे थे कि उनकी संख्या 40 प्रतिशत थी। कस्बों के स्तर पर मुख्य कार्यकर्ता निर्धन किसान एवं मजदूर थे। इसलिए राजनीतिक लाभ, आर्थिक लाभ से अधिक थे, क्योंकि अब उन्होंने उस राजनीतिक शक्ति को प्राप्त कर लिया था जिसने उनको अपने स्वयं के भविष्य को निश्चित करने तथा निर्णय करने की प्रक्रिया में भाग लेने का अवसर प्रदान किया।

बोध प्रश्न 3

1 सीपीसी द्वारा अपनाई गई रणनीति को सौ शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

....

....

....

....

2 जियांगक्सी सोवियत के गठन के कारणों की चर्चा कीजिए और यह चीन में क्रांति लाने के बारे में सोच में आ रहे बदलाव को कैसे दर्शाता हैं।

....

....

....

....

13.12 सारांश

संयुक्त मोर्चे का एक सामाजिक शक्ति के रूप में उदय उसके घटकों की रणनीति अधिक थी, वैचारिक गठबंधन कम। मजदूर आंदोलन और बूर्जुआ वर्ग के बीच गुओमिंगदांग की पहल पर होने वाले संयुक्त प्रयासों का ध्येय एक ही था – और वह था युद्ध सामंतवाद और साम्राज्यवाद के विरुद्ध संघर्ष करना। इस तरह, संयुक्त मोर्चा साम्यवादियों और राष्ट्रवादियों का एक गठबंधन था। राष्ट्रीय मुक्ति और जनतांत्रिक राज्यतन्त्र की स्थापना इस संयुक्त रणनीति के महत्वपूर्ण तत्व थे, इस संयुक्त मोर्चे ने शुरुआत में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (CPC) और गुओमिनदांग (GMD) दोनों गुटों के हितों को साधा। लेकिन, आगे चलकर चीन में अनेक और भी बड़े जनप्रिय आंदोलनों के विकास ने वास्तव में इस मोर्चे को बुनियाद को ही हिला कर रख दिया और इसके पीछे के समान उद्देश्य को भंग कर दिया। 1923-26 के बीच उठने वाले जनप्रिय आंदोलन कैंटन में क्रांतिकारी आधार से मजबूती से जुड़ गये और दक्षिणी सेनाओं ने युद्ध सामंतों के विरुद्ध जो विरोधात्मक रवैया दिखाया उससे इस गठबंधन के संगठनात्मक ढाँचे का संकट और भी गहरा हो गया। क्रांतिकारी लहर की जीत ने दक्षिणपंथी शाखा की शक्तियों में असंतोष भर दिया। इस तरह, भीतर एक विघटन हुआ जो बाहर 1927 में वूहान सरकार के पतन के रूप में सामने आया, वास्तव में यह संयुक्त मोर्चे के पूरे संगठनात्मक ढाँचे के लिए ही घातक साबित हुआ। गुओमिनदांग (GMD) ने मजदूरों, किसानों और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (CPC) के प्रति एक दमनकारी नीति अपनाई।

गुओमिनदांग कम्युनिस्टों के समझौते के विघटन के कारण जिसे 1927 में सयुंक्त मोर्चा भी कहा गया था, चीन में कम्युनिस्ट आंदोलन में निराशा और संगठनात्मक संकट को जन्म दिया। इसके नेता संरचना को पुनर्गठित करने और पार्टी और जनता के बीच अन्तर को मिटाने के लिए एक वैचारिक ढाँचे की तलाश में थे। चीन जिस संकट का सामना कर रहा था उसका हल उन्हें सोवियत प्रारूप में प्रतीत हुआ। इस वैचारिक ढाँचे में जियांगक्सी सोवियत निसंदेह प्रमुख प्रयोग था। जियांगक्सी का सोवियत आधार क्षेत्र मुख्यतयः ग्रामीण चीन में विकसित किया गया था और इस सोवियत की मुख्य आधारशिला कृषि सुधार पर आधारित थी।

13.13 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) भाग 13.2 देखिए।

2) भाग 13.3 देखिए।

बोध प्रश्न 2

1) भाग 13.6 और 13.7 देखिए।

2) भाग 13.8 और 13.9 देखिए।

बोध प्रश्न 3

1) भाग 13.10 देखें।

2) भाग 13.11 देखें।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY